॥ ॐ श्रीपरमात्मने नमः ॥

अथर्ववेदीय

गणपत्युपनिषद्

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

भगवान् गणनायककी स्तुति; उनके बीजमन्त्र, महामन्त्र तथा गायत्री; उपनिषद्के पाठका तथा गणपति-पूजनका माहात्म्य

हरिः ॐ। भगवान् गणपतिको नमस्कार है। तुम्हीं प्रत्यक्ष तत्त्व हो। तुम्हीं केवल कर्ता हो, तुम्हीं केवल धर्ता हो, तुम्हीं केवल हर्ता हो। निश्चयपूर्वक तुम्हीं इन सब रूपोंमें विराजमान ब्रह्म हो। तुम साक्षात् नित्य आत्मस्वरूप हो। मैं ऋत-न्याययुक्त बात कहता हूँ, सत्य कहता हूँ। तुम मेरी (मुझ शिष्यकी) रक्षा करो, वक्ता (आचार्य)-की रक्षा करो। श्रोताकी रक्षा करो। दाताकी रक्षा करो, धाताकी रक्षा करो। व्याख्या करनेवाले आचार्यकी रक्षा करो, शिष्यकी रक्षा करो। पश्चिमसे रक्षा करो, पूर्वसे रक्षा करो, उत्तरसे रक्षा करो, दक्षिणसे रक्षा करो, ऊपरसे रक्षा करो, नीचेसे रक्षा करो, सब ओरसे मेरी रक्षा करो, चारों ओरसे मेरी रक्षा करो। तुम वाङ्मय हो, तुम चिन्मय हो, तुम आनन्दमय हो, तुम ब्रह्ममय हो। तुम सच्चिदानन्द, अद्वितीय हो। तुम प्रत्यक्ष ब्रह्म हो, तुम ज्ञानमय, विज्ञानमय हो। यह सारा जगत् तुमसे उत्पन्न होता है। यह सारा जगत् तुमसे ठहरा हुआ है। यह सारा जगत् तुममें लयको प्राप्त होगा। इस सारे जगत्की तुममें प्रतीति हो रही है। तुम भूमि, जल, अग्नि, वायु और आकाश हो। परा, पश्यन्ती, वैखरी और मध्यमा—वाणीके ये चार विभाग तुम्हीं हो। तुम सत्त्व, रज और तम—तीनों गुणोंसे परे हो। तुम भूत, भविष्य और वर्तमान—तीनों कालोंसे परे हो। तुम स्थूल, सूक्ष्म और कारण—तीनों शरीरोंसे परे हो। तुम मूलाधार चक्रमें नित्य स्थित रहते हो। इच्छा, क्रिया और ज्ञान—तीन प्रकारकी शक्तियाँ तुम्हीं हो। तुम्हारा योगिजन नित्य ध्यान करते हैं। तुम ब्रह्मा हो, तुम विष्णु हो, तुम रुद्र हो, तुम इन्द्र हो, तुम अग्नि हो, तुम वायु हो, तुम सूर्य हो, तुम चन्द्रमा हो, तुम ब्रह्म हो, **भूः, भुवः, स्वः**—ये तीनों लोक तथा ॐकारवाच्य परब्रह्म भी तुम हो।

गणके आदि अर्थात् ग् का पहले उच्चारण करके उसके बाद वर्णोंके आदि अर्थात् अ का उच्चारण करे, उसके बाद अनुस्वार उच्चारित होता है। इस प्रकार अर्धचन्द्रसे सुशोभित 'गं' ॐकारसे अवरुद्ध होनेपर तुम्हारे बीज-मन्त्रका स्वरूप (ॐ गं) है। गकार इसका पूर्वरूप है, अकार मध्यम रूप है, अनुस्वार अन्त्य रूप है, बिन्दु उत्तर रूप है। नाद सन्धान है। संहिता सन्धि है। ऐसी यह गणेशविद्या है। इस महामन्त्रके गणक ऋषि हैं, निचृद्गायत्री छन्द है, श्रीमहागणपति देवता हैं। वह

महामन्त्र है—'**ॐ गं गणपतये नमः**'। एकदन्तको हम जानते हैं। वक्रतुण्डका हम ध्यान करते हैं, वह दन्ती (गजानन) हमें प्रेरणा प्रदान करे[1]। (वह गणेश गायत्री है) एकदन्त, चतुर्भुज, चारों हाथोंमें पाश, अङ्कुश, अभय और वरदानकी मुद्रा धारण किये तथा मूषक-चिह्नकी ध्वजा लिये हुए, रक्तवर्ण, लंबे उदरवाले, सूप-जैसे बड़े-बड़े कानोंवाले, रक्तवस्त्रधारी, शरीरपर रक्तचन्दनका लेप किये हुए, रक्तपुष्पोंसे भलीभाँति पूजित, भक्तके ऊपर अनुकम्पा करनेवाले देवता, जगत्के कारण, अच्युत, सृष्टिके आदिमें आविर्भूत, प्रकृति और पुरुषसे परे श्रीगणेशजीका जो नित्य ध्यान करता है, वह योगी सब योगियोंमें श्रेष्ठ है।

व्रात (देवसमूह)-के नायकको नमस्कार, गणपतिको नमस्कार, प्रमथपति (शिवजीके गणोंके अधिनायक)-के लिये नमस्कार, लम्बोदरको, एकदन्तको, विघ्नविनाशकको, शिवजीके पुत्रको तथा श्रीवरदमूर्तिको नमस्कार, नमस्कार।[2]

यह अथर्वशिरस (अथर्ववेदकी उपनिषद्) है। इसका जो पाठ करता है, वह ब्रह्मत्वको प्राप्त करनेका अधिकारी हो जाता है। सब प्रकारके विघ्न उसके लिये बाधक नहीं होते। वह सब जगह सुख पाता है। वह पाँचों प्रकारके महान् पातकों तथा उपपातकोंसे मुक्त हो जाता है। सायंकाल पाठ करनेवाला दिनके पापोंका नाश करता है। प्रातः पाठ करनेवाला रात्रिके पापोंका नाश करता है। जो प्रातः-सायं दोनों समय इस पाठका प्रयोग करता है, वह निष्पाप हो जाता है। धर्म, अर्थ, काम और मोक्षको प्राप्त करता है। इस अथर्वशीर्षको, जो शिष्य न हो, उसे नहीं देना चाहिये। जो मोहके कारण देता है, वह पातकी हो जाता है। सहस्र बार पाठ करनेसे जिन-जिन कामनाओंका उच्चारण करता है, उन-उनकी सिद्धि इसके द्वारा ही मनुष्य कर सकता है। इसके द्वारा जो गणपतिको स्नान कराता है, वह वक्ता बन जाता है। जो चतुर्थी तिथिको उपवास करके जपता है, वह विद्यावान् हो जाता है। यह अथर्वण-वाक्य है। जो इस मन्त्रके द्वारा तपश्चरण करना जानता है, वह कदापि भयको नहीं प्राप्त होता। जो दूर्वाङ्कुरोंके द्वारा भगवान् गणपतिका यजन करता है, वह कुबेरके समान हो जाता है। जो लाजोंके द्वारा यजन करता है, वह यशस्वी होता है, वह मेधावी होता है। जो सहस्र लड्डुओं (मोदकों)-के द्वारा यजन करता है, वह वाञ्छित फलको प्राप्त करता है। जो घृतके सहित समिधासे यजन करता है, वह सब कुछ प्राप्त करता है, वह सब कुछ प्राप्त करता है। आठ ब्राह्मणोंको सम्यक् रीतिसे ग्रहण करानेपर सूर्यके समान तेजस्वी होता है। सूर्यग्रहणमें महानदीमें या प्रतिमाके समीप जपनेसे मन्त्रसिद्धि होती है। वह महाविघ्नसे मुक्त हो जाता है, महापातकसे मुक्त हो जाता है, महान् दोषसे मुक्त हो जाता है। जो इस प्रकार जानता है, वह सर्वज्ञ हो जाता है। सर्वज्ञ हो जाता है।

॥ अथर्ववेदीय गणपत्युपनिषद् समाप्त ॥

शान्तिपाठ

ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।
स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳसस्तनूभिर्व्यशेम देवहितं यदायुः॥
स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥

ॐ शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

---

१. 'एकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्ती प्रचोदयात्।'

२. नमो व्रातपतये नमो गणपतये नमः प्रमथपतये नमस्तेऽस्तु लम्बोदरायैकदन्ताय विघ्नविनाशिने शिवसुताय श्रीवरदमूर्तये नमो नमः।